



प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा (जन्म : १९६०) काशी की पण्डितपरम्परा और आचार्य कुल में दीक्षित दर्शनशास्त्री हैं। आपने दर्शनशास्त्र में एम.ए. (१९८५) एवं पी.एच.डी. (१९८८) की उपाधि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से तथा बौद्धदर्शनान्वय (१९९५) की उपाधि सम्पूर्णगन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से प्राप्त की है।

आप भारतीय तत्त्वविद्या, प्रमाणशास्त्र, भाषादर्शन एवं सांस्कृतिक अध्ययन के दीक्षित और लिखित परिगृह्यधर्म अध्यापक हैं। दर्शन और संस्कृति-विज्ञान के क्षेत्र में आपके वैचारिक विमर्शरसक लेखन समकालीन भारतीय दार्शनिकों में समुद्रत हैं। आपके द्वारा लिखित एवं सम्पादित ग्रन्थ से अधिक ग्रन्थ प्रकाशित हैं। भारत के वैचारिक म्यराज और राष्ट्रमभा के राजपथ पर दर्शन के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान एवं प्रगत योग्यरसक ग्रन्थमार्गों के लिए आपको अनेक सम्मानों से विभूषित किया गया है।

प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा यमपति डॉक्टर हरसिंह गौर विश्वविद्यालय, यागर (म.प्र.) में दर्शनशास्त्र के आचार्य, दर्शन प्रतिष्ठान, जयपुर से प्रकाशित पत्रिका 'उन्मोलन' के सम्पादक और डॉक्टर हरसिंह गौर विश्वविद्यालय को श्रेष्ठ पत्रिका 'माध्य भारती' के प्रधान सम्पादक हैं।

भारत के आत्मविभाजन की एक व्याख्या मूलतः हिन्दू में दार्शनिक अम्बिकादत्त शर्मा ने इस पुस्तक के रूप में प्रस्तुत की है। इस ग्रन्थीर विषय पर एक से अधिक व्याख्याएँ न सिर्फ सफल हैं बल्कि आशीर भी। यह व्याख्या उस दिशा में वैचारिक उद्वेलन करे और संवाद हो और वह हमारे समय में अनेक बुद्धि-ज्ञान विरोधी शक्तियों द्वारा अवशङ्कित किये जा रहे संवाद को फिर सजीव करने का आधार बने ऐसे आह्वान करने चाहिये।

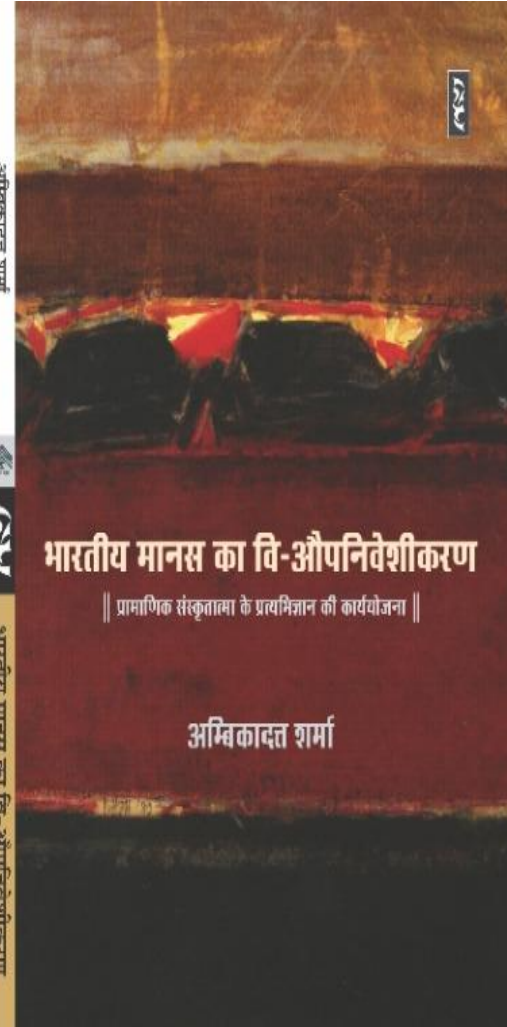
—अशोक वाजपेयी



अम्बिकादत्त शर्मा



भारतीय मानस का वि-औपनिवेशीकरण



औपनिवेशीकरण की प्रक्रिया और उत्तर-औपनिवेशिक प्रभाव में भारत का कम से कम तीन बार आत्मविभाजन हुआ है। भारत के वर्तमान को उसके गौरवशाली अतीत से काट दिया जाना पड़ना आत्मविभाजन था। इसका परिणाम यह हुआ कि हम अपनी ही संस्कृति और सभ्यता के प्रति हीन भावना से ग्रस्त हुए और हम तरह-तरह के वर्तमान को आधुनिक यूरोप से प्रतिकृत होने के लिए मनोवैज्ञानिक रूप से तैयार कर दिया गया। दूसरा आत्मविभाजन स्वतन्त्र्योत्तर काल में राजनीति और संस्कृति के बीच उत्तरोत्तर बढ़ते हुए पारस्परिक के कारण हुआ है। इसके चलते यह भारत को एकलमक गुण-सूत्रों वाला सांस्कृतिक राष्ट्र था, औपनिवेशिक प्राधिकरण से मुक्त होकर भी संस्कृतिविहीन एक राजनीतिक राष्ट्र-राज्य में रूपान्तरित होकर रह गया। भारत का तीसरा आत्मविभाजन भाषाई आधार पर हुआ है। इस देश में अंग्रेजों ने राष्ट्रीयता की भाषा की परखी को अस्वीकार कर लिया और भारतीय भाषाएँ बहुविध जन-राष्ट्रियता को भाषाई बना कर रह गयीं। इस तरह राष्ट्रीयता और जन-राष्ट्रीयताओं में विभाजित भारत से राष्ट्रीयता विलुप्त कर दी गयी। इस पुस्तक में भारतीय मानस के औपनिवेशीकरण और वि-औपनिवेशीकरण को उपर्युक्त तीनों आत्मविभाजनों के व्यापक सन्दर्भ में समझने का मूलगन्तव्य वैचारिक उपक्रम साधन गया है। यह उपक्रम एक 'समष्टि की कार्ययोजना' है, क्योंकि औपनिवेशीकरण मूलतः संस्कृतिमान के स्वरूप विषयक अज्ञान की समस्या है; इसलिए इसकी फलश्रुति भारतीय संस्कृतिमान का प्रामाणिक प्रस्थापन है।

Name of the Author	-	Ambika Datta Sharma
Title of the book	-	भारतीय मानस का वि-औपनिवेशीकरण
Year of publication	-	2020
ISBN	-	978-93-89830-44-6
Name of the publisher	-	सेतु प्रकाशन, नई दिल्ली,